स्वामी कृपाल्वानंद जी

स्वामी कृपाल्वानंदजी का जन्म गुजरात राज्य के वडोदरा जिले में दर्भावती (वर्तमान के डभोई) नगर में निवास करते एक कायस्थ ब्राह्मण परिवार में दिनांक 13 /1/1993 के दिन हुआ।

उन्होंने 18 वर्ष की आयु में परिवार की आर्थिक स्थिति सुधारने के प्रयास रुप मायानगरी मुम्बई जाकर नोकरी करने का निश्चय किया। ई.सन् 1930 के नवम्बर महीने में वह मुम्बई आ पहुँचे जहाँ उनकी भेंट अलौकिक योग शक्ति संपन्न असाधारण योगी स्वामी प्रणवानंदजी से हुई। (स्वामी प्रणवानंदजी के मृत्यु बाद प्रणवानंदजी के पार्थिव शरीर में भगवान लकुलीशजी परकाया प्रवेश कर विशेष कार्य संपन्न करने हेतु मुंबई पधारे थे) वह परकाया प्रवेश करने वाले असाधारण योगी शिवावतार भगवान लकुलीशजी उनके आध्यात्म पथ के गुरु बने। 1931 में उनको योग रहस्य की दीक्षा देकर अनुग्रहित किया तथा भविष्य में किसी अनन्य गौ भक्त विरक्त संन्यासी से संन्यास ग्रहण करने कि आज्ञा दी।

स्वामी शांतानंदजी महाराज से ई.सन् 1942 में रामनवमी के शुभ दिन पर उन्हें संन्यास की दीक्षा प्राप्त हुई तथा नया नाम "कृपालु मुनि" की प्राप्ति हुई। संन्यास प्राप्ति के बाद कुछ समय के लिए गुरु आज्ञा से उन्हों ने हरिद्वार स्थित मुनि मंडल आश्रम में रहकर संस्कृत भाषा, षड् दर्शन, पुराण – उपनिषद, श्रीमद भगवद् गीता इत्यादी शास्त्र का अभ्यास किया। उन्होंने गुरु आज्ञा से शरीर विज्ञान एवं मनोविज्ञान का भी अभ्यास किया।

ई.सन् 1956 में कायावरोहण में भगवान लकुलीश जी और विश्वामित्र मुनि ने उन्हें दर्शन दिये और विश्व में सनातन संस्कृति पुनरुत्थान और कायावरोहण तीर्थ का पुनरोद्धार कार्य करने की जिम्मेदारी सोंपी। ई.सन् 1959 से वो "कृपालु आश्रम मलाव" गुजरात में एकांतिक योग साधना में रहने लगे।

ई.सन् 1965 में कृपाल्वानंदजी ने "कायावरोहण तीर्थ सेवा समाज" संस्था की स्थापना की और द्वापर युग में विश्वामित्र मुनि द्वारा स्थापित एवं जिस में स्वयं भगवान लकुलीशजी मूर्तिमान हुए थे वह शिवलिंग की नूतन मंदिर में 3/5/1974, बैसाख शुक्ल द्वादशी के दिन ब्रह्मेश्वर महादेव नाम से प्राण प्रतिष्ठा की गयी।

दिनांक 13/11/1976 के दिन कृपाल्वानंदजी ने कायावरोहण में "श्री लकुलीश योगविद्यालय" की स्थापना की।

कृपाल्वानंदजी ने अपने जीवन के 18/5/1977 से 1/10/1981 तक अमरीका में रह कर योग साधना व सनातन संस्कृति प्रसार का कार्य किया।

29/12/1981 के शाम सूर्यास्त के समय अहमदाबाद में उनकी मृत्यु हुई। उनके पार्थिव देह पर मलाव में समाधि मंदिर बना हुआ है।